

CINBAX-II 2026 के बारे में

- CINBAX-II भारतीय सेना और कंबोडियाई शाही सेना के बीच एक द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास है।
- स्थान: कंबोडिया के कंबोंग स्पीउ प्रांत में स्थित टेचो सेन नोम थॉम मरियास प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित।
- संयुक्त राष्ट्र जनादेश के अध्याय VII के अंतर्गत संचालन किया जाता है, जो उप-पारंपरिक वातावरणों पर केंद्रित है।
- उद्देश्य: भविष्य के संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों के लिए अंतर-संचालनीयता में सुधार करना और सामरिक विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करना।
- फोकस क्षेत्र: प्रशिक्षण में आतंकवाद-विरोधी अभियान, स्नाइपर कौशल, ड्रोन संचालन और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में मोर्टार रणनीति शामिल हैं।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने बचपन में मधुमेह की देखभाल के लिए दिशानिर्देश जारी किए।

संदर्भ

3 मई 2026 को, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा वितरण में सर्वोत्तम प्रथाओं पर राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन के दौरान बच्चों में मधुमेह मेलिटस पर भारत का पहला व्यापक मार्गदर्शन दस्तावेज पेश किया।

मार्गदर्शन ढांचे की मुख्य विशेषताएं

- सार्वभौमिक स्क्रीनिंग रणनीति: दिशानिर्देशों में सामुदायिक जागरूकता और विद्यालय-आधारित मंचों के माध्यम से बच्चों (0-18 वर्ष) की सार्वभौमिक स्क्रीनिंग का प्रस्ताव है।
- निःशुल्क सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ: सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान स्क्रीनिंग, निदान संबंधी सहायता, आजीवन इंसुलिन आपूर्ति, ग्लूकोमीटर, टेस्ट स्ट्रिप्स और अनुवर्ती देखभाल सहित आवश्यक सेवाएँ निःशुल्क प्रदान करेंगे।
- देखभाल की निरंतरता का मॉडल: यह ढांचा सामुदायिक स्तर की स्क्रीनिंग को जिला अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में उन्नत उपचार से जोड़ता है, जिससे प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल स्तरों पर देखभाल की एक एकीकृत निरंतरता सुनिश्चित होती है।
- 4T जागरूकता मॉडल: शौचालय, प्यास, थकान और पतलापन, जो माता-पिता, शिक्षकों और देखभालकर्ताओं को टाइप 1 मधुमेह के शुरुआती लक्षणों की पहचान करने में मदद करता है।
- देखभालकर्ताओं के लिए क्षमता निर्माण: उन्हें इंसुलिन प्रशासन, रक्त शर्करा की निगरानी, आपातकालीन स्थिति से निपटने और दिन-प्रतिदिन रोग प्रबंधन में प्रशिक्षण प्रदान करना।
- दीर्घकालिक देखभाल सहायता: मधुमेह से पीड़ित बच्चों के लिए।

सतत और उत्तरदायित्वपूर्ण खनन

संदर्भ

जैसे-जैसे देश कम कार्बन उत्सर्जन वाली अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहे हैं, लिथियम, कोबाल्ट, तांबा और दुर्लभ-मृदा तत्वों जैसे महत्वपूर्ण खनिजों की मांग में भारी वृद्धि हुई है।

सतत खनन के बारे में

- इसका उद्देश्य आर्थिक लाभों को पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता के साथ एकीकृत करना है।

- यह संसाधनों के कुशल उपयोग, खनन के बाद खनन भूमि के पुनर्वास और पुनर्चक्रण एवं पुनः उपयोग को बढ़ावा देने पर बल देता है ताकि नए खनिजों के निष्कर्षण की आवश्यकता कम हो सके।
- चूंकि खनिज सीमित और गैर-नवीकरणीय हैं, इसलिए इस मॉडल को अक्सर "कमजोर स्थिरता" से जोड़ा जाता है, जहां खनन को तभी उचित ठहराया जाता है जब यह प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण की भरपाई के लिए स्थायी मानवीय, आर्थिक और सामाजिक मूल्य उत्पन्न करता है।
- सतत खनन मूल रूप से अस्थिर है क्योंकि यह ऊर्जा-गहन प्रक्रियाओं के माध्यम से सीमित, गैर-नवीकरणीय संसाधनों के क्षरण पर निर्भर करता है, जिससे अपरिवर्तनीय पारिस्थितिक क्षति, स्थायी भूदृश्य परिवर्तन और सामाजिक विस्थापन होता है।

जिम्मेदार खनन के बारे में

- यह दृष्टिकोण स्वच्छ ऊर्जा (सौर, पवन, हरित हाइड्रोजन) के उपयोग और सख्त प्रदूषण नियंत्रण के माध्यम से परिचालन संबंधी नुकसान को कम करने पर केंद्रित है।
- यह सामुदायिक भागीदारी और सहमति को प्राथमिकता देता है, जिससे प्रभावित आबादी के लिए उचित मुआवजा और लाभ-साझाकरण सुनिश्चित होता है, साथ ही नैतिक श्रम प्रथाओं और श्रमिक सुरक्षा को भी बनाए रखा जाता है।
- यह संचालन को पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ESG) सिद्धांतों के अनुरूप बनाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य अपशिष्ट को कम करना और संसाधनों का पारदर्शी उपयोग करना है, ताकि कॉर्पोरेट जवाबदेही में सुधार हो सके।

एब्रोलहोस रीफ

संदर्भ

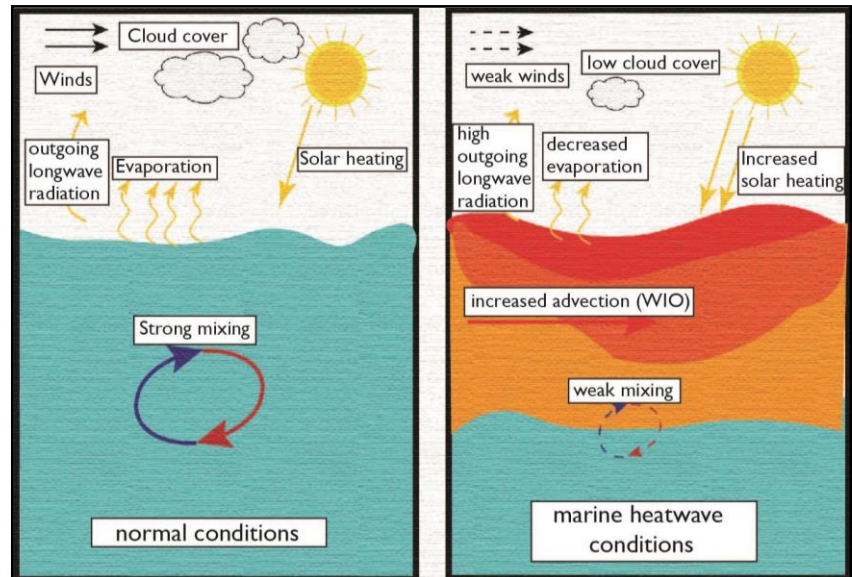
ब्राजील में एब्रोलहोस नेशनल मरीन पार्क से एकत्र किए गए कोरल के नमूनों से पता चलता है कि समुद्री हीटवेव के कारण 18 वर्षों में उनकी जैव विविधता में लगभग 15% की गिरावट आई है।

एब्रोलहोस रीफ के बारे में

- **स्थान और सुरक्षा:** दक्षिण अटलांटिक में स्थित, एब्रोलहोस रीफ ब्राजील के एब्रोलहोस मरीन नेशनल पार्क का केंद्रबिंदु है।
- **अद्वितीय भूविज्ञान:** यह अपने विशिष्ट "चैपिरोस" के लिए प्रसिद्ध है, जो इस क्षेत्र के लिए अद्वितीय विशाल, मशरूम के आकार की प्रवाल संरचनाएं हैं।

समुद्री हीटवेव के बारे में

- समुद्री हीटवेव(MHWs) एक विस्तारित अवधि के लिए समुद्री तापमान में होने वाली अत्यधिक वृद्धि हैं।
- यह तब घटित होता है जब समुद्र के किसी विशेष क्षेत्र की सतह का तापमान कम से कम पांच दिनों के लिए औसत तापमान से 3 या 4 डिग्री सेल्सियस ऊपर बढ़ जाता है।



- चूंकि वैश्विक तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.3 डिग्री सेल्सियस ऊपर पहुंच गया है, इसलिए अतिरिक्त ऊष्मा का 90% हिस्सा महासागर द्वारा अवशोषित किया गया है।
- इसने 1850 के बाद से वैश्विक औसत SST (समुद्री सतह तापमान) में लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि की है, और पिछले चार दशकों में यह वृद्धि लगभग 0.6 डिग्री सेल्सियस रही है।
- **प्रवाल भित्तियों (Coral Reefs) पर समुद्री हीटवेव का प्रभाव:** बढ़ा हुआ तापमान प्रवाल भित्तियों को तनावग्रस्त करता है, जिससे विरंजन (bleaching) और मृत्यु दर में वृद्धि होती है।
 - **उदाहरण:** एक जलमग्न सर्वेक्षण से पता चला है कि मई 2020 में समुद्री हीटवेव के बाद तमिलनाडु तट के पास मन्नार की खाड़ी में 85% प्रवाल विरंजित (bleached) हो गए थे।

नेपाल ने क्षेत्रीय दावे को नवीनीकृत किया

संदर्भ

नेपाल ने लिपुलेख मार्ग के माध्यम से कैलाश मानसरोवर यात्रा को फिर से शुरू करने पर चिंता जताई है।

कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए पास

- **लिपुलेख दर्रा:** उत्तराखंड में भारत-चीन-नेपाल ट्राई-जंक्शन के पास उच्च ऊंचाई वाला हिमालयी दर्रा; कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए प्रमुख मार्ग।
- **नाथू ला दर्रा:** भारत-चीन सीमा पर सिक्किम में पर्वतीय दर्रा; कैलाश मानसरोवर यात्रा और एक व्यापार गलियारे के लिए एक वैकल्पिक मार्ग के रूप में कार्य करता है।

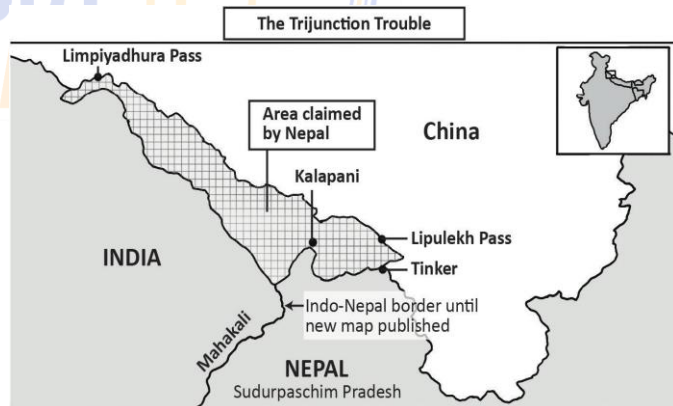
भारत-नेपाल क्षेत्रीय विवाद (कालापानी मुद्दा) के बारे में

विवादित क्षेत्र: भारत और नेपाल के बीच

कालापानी, लिपुलेख, लिंपियाधुरा और सुस्ता शामिल

ऐतिहासिक आधार: सुगौली की संधि (1816):

- काली नदी (महाकाली नदी) के किनारे परिभाषित सीमा
- नदी के स्रोत को लेकर विवाद
 - **नेपाल:** काली नदी लिंपियाधुरा से निकलती है → क्षेत्र नेपाल का है
 - **भारत:** काली कालापानी से निकलती है → क्षेत्र भारत का है



हैं।

भारत की स्थिति

- 1950 के दशक से प्रशासनिक नियंत्रण
- बुनियादी ढांचे और सैन्य तैनाती की उपस्थिति
- उत्तराखंड (पिथौरागढ़ जिला) में ऐतिहासिक अभिलेख स्थान क्षेत्र

नेपाल की स्थिति

- काली नदी के पूर्व का क्षेत्र नेपाल का होने का दावा करता है
- अपने मानचित्रों में कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा को शामिल करता है
- सुगौली संधि को कानूनी आधार बताता है

सामरिक महत्व

- भारत-नेपाल-चीन ट्राई-जंक्शन पर स्थित है
- सीमा सुरक्षा और निगरानी के लिए महत्वपूर्ण (चीन मोर्चा)
- कैलाश मानसरोवर यात्रा मार्ग (लिपुलेख दर्रा) पर स्थित है

भारत का निजी पृथ्वी अवलोकन उपग्रह

संदर्भ

बंगलुरु स्थित स्टार्टअप GalaxEye ने मिशन दृष्टि (Mission Drishti) लॉन्च किया है।

मिशन दृष्टि के बारे में

- मूल विशेषताएं
 - प्रकार: पृथ्वी अवलोकन उपग्रह (Earth Observation Satellite)
 - वजन: ~190 किग्रा
 - विकासकर्ता: गैलेक्सी (भारत), स्पेसएक्स (SpaceX) के माध्यम से प्रक्षेपित
 - प्रकृति: दोहरे उपयोग (नागरिक और रक्षा अनुप्रयोग) वाले
- अद्वितीय तकनीक (OptoSAR): विश्व का पहला उपग्रह जो निम्नलिखित को एकीकृत करता है:
 - इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल (EO) सेंसर: (दिन के उजाले में उच्च-रिज़ॉल्यूशन इमेजरी)
 - सिंथेटिक एपर्चर रडार (SAR): (सभी मौसमों में और रात में इमेजिंग)
 - लाभ: मौसम या प्रकाश की स्थिति की परवाह किए बिना निरंतर इमेजिंग सक्षम बनाता है।
- क्षमताएं
 - अखिल-मौसम इमेजिंग: बादलों, बारिश और अंधेरे में भी कार्य करता है।
 - उच्च-आवृत्ति डेटा: विश्वसनीय और सुसंगत पृथ्वी अवलोकन डेटा प्रदान करता है।
 - बहु-क्षेत्रीय उपयोग: रक्षा निगरानी, कृषि निगरानी, आपदा प्रबंधन, समुद्री ट्रैकिंग और बुनियादी ढांचा योजना।
- रणनीतिक महत्व
 - निजी क्षेत्र की वृद्धि: IN-SPACe द्वारा समर्थित भारत के निजी अंतरिक्ष उद्योग के उत्थान को दर्शाता है।
 - वैश्विक मांग: उन्नत डेटा सेवाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों की उच्च रुचि।
 - इसरो (ISRO) का पूरक: भारत के मौजूदा पृथ्वी अवलोकन नेटवर्क (~29 उपग्रह) को सहायता प्रदान करता है।

NASM-SR(नौसेना एंटी-शिप मिसाइल – शॉर्ट रेंज)

संदर्भ

डीआरडीओ (DRDO) और भारतीय नौसेना ने एक हेलीकॉप्टर से स्वदेशी रूप से विकसित NASM-SR मिसाइल का सफलतापूर्वक 'साल्वो परीक्षण' (salvo test) आयोजित किया।

NASM-SR मिसाइल के बारे में

- इसे सतह-रोधी युद्ध (anti-surface warfare) के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो जहाज-जनित हेलीकॉप्टरों को सुरक्षित दूरी से (नौसैनिक जहाजों को जोखिम में डाले बिना) दुश्मन के जहाजों पर हमला करने में सक्षम बनाता है।
- प्रणोदन प्रणाली: सॉलिड बूस्टर रॉकेट (प्रारंभिक थ्रस्ट) और सस्टेनर इंजन (लंबी उड़ान अवधि)।
- प्रमुख घटक:
 - सीकर (Seeker): लक्ष्यों का पता लगाता है और उन्हें ट्रैक करता है।
 - रेडियो अल्टीमीटर: कम ऊंचाई वाली 'सी-स्कimming' (sea-skimming) उड़ान बनाए रखता है।
 - टू-वे डेटा लिंक: ऑपरेटर के साथ वास्तविक समय में संचार सक्षम बनाता है।
- प्रमुख विशेषताएं
 - मैन-इन-लूप (Man-in-Loop) क्षमता: ऑपरेटरों को उड़ान के बीच में लक्ष्य या प्रक्षेपवक्र (trajectory) बदलने की अनुमति देती है (भीड़भाड़ वाले समुद्री क्षेत्रों में उपयोगी; संपार्श्विक क्षति को कम करती है और सटीकता में सुधार करती है)।
 - वॉटरलाइन हिट क्षमता: जहाज के सबसे संवेदनशील हिस्से (जलरेखा के पास) को लक्षित करती है (जिससे जलभराव होता है और डूबने की संभावना अधिक हो जाती है)।
 - साल्वो लॉन्च क्षमता: त्वरित उत्तराधिकार में कई मिसाइलें दागी जा सकती हैं (दुश्मन की रक्षा प्रणालियों को पंगु बना देती है)।
 - सी-स्कimming प्रक्षेपवक्र: (कम रडार पहचान)।
 - प्रॉक्सिमिटी फ्यूज डेटोनेशन: (अधिकतम क्षति के लिए लक्ष्य के पास विस्फोट)।
- पूर्ववर्ती 'सी ईगल' (Sea Eagle) मिसाइल से अंतर
 - वजन: NASM-SR (380 किग्रा) 'सी ईगल' मिसाइल (580 किग्रा) से हल्की है (प्रति हेलीकॉप्टर अधिक मिसाइलों की अनुमति देती है)।
 - मार्गदर्शन (Guidance): NASM-SR में 'मैन-इन-लूप' नियंत्रण है, जबकि सी ईगल 'दागो और भूल जाओ' (fire-and-forget) प्रणाली पर आधारित थी।
 - सटीकता: इसमें वॉटरलाइन टारगेटिंग शामिल है, जो सी ईगल में अनुपस्थित थी।
 - रेंज: कम रेंज (55 किमी बनाम 110 किमी), लेकिन बेहतर आधुनिक क्षमताएं और लचीलापन।

सचेत (SACHET) आपातकालीन अलर्ट प्रणाली

संदर्भ

भारत ने हाल ही में अपनी सेल ब्रॉडकास्ट-आधारित अलर्ट प्रणाली (SACHET) का राष्ट्रव्यापी परीक्षण किया।

सेल ब्रॉडकास्ट टेक्नोलॉजी के बारे में

- **वन-टू-मैनी मैसेजिंग सिस्टम:** एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में सभी मोबाइल फोन पर एक साथ अलर्ट भेजता है (इसका उपयोग भूकंप, बाढ़, चक्रवात जैसी आपदाओं के लिए किया जाता है)।
- **टावर-आधारित ट्रांसमिशन:** संदेश सेल टावरों से सभी जुड़े उपकरणों पर भेजे जाते हैं (व्यक्तिगत फोन नंबरों की आवश्यकता नहीं होती)।
- **विकासकर्ता:** दूरसंचार विभाग (DoT) के तहत **C-DOT** द्वारा विकसित, जो अभी परीक्षण के दौर में है (आपदा प्रतिक्रिया को बढ़ाने की उम्मीद है)।
- **तत्काल वितरण:** नेटवर्क की भीड़भाड़ (congestion) को बायपास करता है (आपात स्थिति के दौरान तेजी से प्रसार सुनिश्चित करता है)।
- **एसएमएस (SMS) से अंतर**
 - **ब्रॉडकास्ट बनाम व्यक्तिगत:** एक संदेश लाखों लोगों तक पहुंचता है (एसएमएस के वन-टू-वन संचार के विपरीत)।
 - **पंजीकरण की आवश्यकता नहीं:** उपयोगकर्ता डेटा संग्रहीत किए बिना कार्य करता है (गोपनीयता के अनुकूल प्रणाली)।
 - **स्थान-विशिष्ट अलर्ट:** केवल प्रभावित क्षेत्रों को लक्षित करता है (टावर कवरेज के आधार पर)।
- **प्रमुख विशेषताएं**
 - **अचूक अलर्ट (Unmissable Alerts):** साइलेंट मोड, कॉल और ऐप्स को ओवरराइड करता है (तेज ध्वनि और कंपन के साथ)।
 - **स्थायी अधिसूचना (Persistent Notification):** पावती (acknowledgment) मिलने तक संदेश स्क्रीन पर बना रहता है (दृश्यता सुनिश्चित करता है)।
 - **बहु-भाषा समर्थन:** स्थानीय भाषाओं में अलर्ट प्रदान करता है (पहुंच में सुधार करता है)।
 - **वैश्विक उपयोग:** जापान (J-Alert), संयुक्त राज्य अमेरिका (WEA) और यूरोपीय संघ के देशों जैसे राष्ट्रों में उपयोग किया जाता है (मानक वैश्विक अभ्यास)।

समाचार में स्थान: अरबसलीम

संदर्भ

लेबनान में अरबसलीम पर हमले में कम से कम एक व्यक्ति की मौत और तीन घायल

अरबसलीम के बारे में

- अरबसलीम दक्षिणी लेबनान के नबातिह जिले में एक नगर पालिका है।
- **नबातीह जिला:** दक्षिणी लेबनान में लिटानी नदी के उत्तर में स्थित है



समाचार में अन्य स्थान

स्थान	मुख्य विवरण
लिटानी नदी	दक्षिणी लेबनान में प्रमुख नदी; एक रणनीतिक सीमा रेखा के रूप में कार्य करती है (इजरायल के संचालन काफी हद तक इसके दक्षिण में; अक्सर युद्धविराम की गतिशीलता में संदर्भित)
श्रीफा	दक्षिणी लेबनान में शहर
"थेलो लाइन" (परिचालन सीमा)	दक्षिणी लेबनान में इजरायल-नियंत्रित क्षेत्र को चिह्नित करने वाली अनौपचारिक रेखा; इजरायल ने इस सीमा से परे कार्रवाई की चेतावनी दी है



मुख्य परीक्षा

यूरोपीय संघ के सीमा समायोजन तंत्र के प्रति भारत की रणनीतिक प्रतिक्रिया

संदर्भ

यूरोपीय संघ का कार्बन सीमा समायोजन तंत्र (सीबीएएम) 1 जनवरी, 2026 को लागू हुआ, जो वैश्विक व्यापार और जलवायु नीति के अंतर्संबंध में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है।

कार्बन सीमा समायोजन तंत्र के बारे में

- यह कार्बन-गहन उत्पादों पर लगाया गया यूरोपीय संघ (EU) का एक **टैरिफ** (प्रशुल्क) है।
- यह '**कार्बन लीकेज**' (Carbon Leakage) को रोकने के लिए यूरोपीय संघ का एक नया उपकरण है, जिसका अर्थ है उत्पादन को गैर-यूरोपीय देशों में स्थानांतरित करना जहां उत्पादन से जुड़ी कार्बन लागत कम या शून्य है।
- **उद्देश्य:** यूरोपीय संघ में प्रवेश करने वाली कार्बन-गहन वस्तुओं के उत्पादन के दौरान उत्सर्जित कार्बन पर उचित मूल्य निर्धारित करना और गैर-यूरोपीय देशों में स्वच्छ औद्योगिक उत्पादन को प्रोत्साहित करना।

वर्तमान स्थिति

- **नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार:** 200 गीगावॉट का आंकड़ा पार कर लिया है, और गैर-जीवाश्म ऊर्जा से चलने वाली क्षमता 51% से अधिक हो गई है।
- **शुद्ध शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य:** 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य रखा गया है।
- **हरित हाइड्रोजन:** 2030 तक 5 मिलियन मीट्रिक टन वार्षिक उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।
- **कार्बन बाजार:** कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम (सीसीटीएस) के अंतर्गत 490 बाध्य उच्च-उत्सर्जन औद्योगिक इकाइयां शामिल हैं।
- **इथेनॉल मिश्रण:** 20% मिश्रण हासिल किया गया है, जिससे तेल आयात और परिवहन उत्सर्जन में कमी आई है।

संबद्ध चुनौतियाँ

- **असमान कार्बन लागत बोझ:** यूरोपीय संघ के उद्योगों को 2030 तक 'डीकार्बोनाइजेशन सब्सिडी' और चरणबद्ध छूट (phased allowances) प्राप्त होती है, जबकि भारतीय निर्यातकों को बिना किसी सरकारी सहायता के पूर्ण CBAM शुल्क वहन करना पड़ता है।
- **भारत-EU FTA के तहत कोई छूट नहीं:** मुक्त व्यापार समझौते (27 जनवरी, 2026) में भारत को कोई विशेष रियायत नहीं दी गई है, क्योंकि यूरोपीय संघ ने एक समान और अनम्य दृष्टिकोण बनाए रखा है।
- **जलवायु न्याय और संप्रभुता:** कार्बन राजस्व को अपने पास रखते हुए डीकार्बोनाइजेशन की लागत विकासशील देशों पर डालकर, यूरोपीय संघ भारत को वैश्विक जलवायु शासन में 'नियम-निर्माता' के बजाय 'नियम-पालक' (rule-taker) बनाने का जोखिम उठा रहा है।

क्या भारत को भारत सीमा समायोजन तंत्र (IBAM) की आवश्यकता है

एक रणनीतिक प्रतिउपाय: भारत एक भारत सीमा समायोजन तंत्र (IBAM) शुरू करके सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया दे सकता है, जो CBAM-विनियमित बाजारों के लिए निर्यात पर कार्बन-आधारित शुल्क लगाएगा।

समन्वित कार्यान्वयन की आवश्यकता

- आईबीएएम को एकतरफा लागू नहीं किया जाना चाहिए। इसके बजाय, इसे यह सुनिश्चित करने के लिए अनुलग्नक 14-ए के

संस्थागत ढांचे के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए:

- सीबीएएम अनुच्छेद 9 के तहत मान्यता
- CBAM देनदारियों की निर्बाध ऑफसेटिंग
- नीति विश्वसनीयता और अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति

कार्बन बोझ को सीमित करना: यदि CBAM के साथ उचित रूप से संरेखित किया जाता है, तो IBAM यह सुनिश्चित कर सकता है कि भारतीय निर्यातकों को अकेले CBAM द्वारा लगाए जाने वाले शुद्ध कार्बन मूल्य से अधिक किसी लागत का सामना न करना पड़े।

आगे की राह

- **कार्बन बाजार की स्थापना:** भारत की CCTS (2023) औद्योगिक प्रतिष्ठानों को सत्यापित उत्सर्जन के विरुद्ध व्यापार योग्य कार्बन क्रेडिट रखने की अनुमति देती है, जो एक मापने योग्य घरेलू कार्बन मूल्य निर्धारण ढांचा स्थापित करती है।
- **CBAM अनुच्छेद 9 का लाभ उठाना:** CBAM का अनुच्छेद 9 आयातकों को 'गृह-देश कार्बन लागत' (home-country carbon costs) काटने की अनुमति देता है, जो यूरोपीय सीमा पर भारत के घरेलू कार्बन मूल्य को मान्यता देने के लिए एक कानूनी मार्ग बनाता है।
- **दोहरे मूल्य निर्धारण से बचना:** अनुच्छेद 9 के तहत CCTS को क्रेडिट प्रदान करना दोहरे मूल्य निर्धारण को रोकता है, पर्यावरणीय अखंडता बनाए रखता है और व्यापारिक निष्पक्षता सुनिश्चित करता है।

अंततः, "CBAM का IBAM-करण" एक व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाता है—राष्ट्रीय संप्रभुता और विकासात्मक प्राथमिकताओं को सुरक्षित रखते हुए समान शर्तों पर कार्बन-बाधित दुनिया के साथ जुड़ना।

भारत में बंदरगाहों का निगमीकरण: दक्षता और वाणिज्यिक स्वायत्तता की शुरुआत

संदर्भ

समुद्री मार्गों पर भारत की भारी व्यापार निर्भरता बंदरगाहों के कुशल शासन को महत्वपूर्ण बनाती है, फिर भी प्रमुख बंदरगाह पारंपरिक रूप से पुराने 'प्रमुख बंदरगाह ट्रस्ट अधिनियम, 1963' के तहत संचालित होते थे।

निगमीकरण (Corporatisation) क्या है?

- निगमीकरण का अर्थ निजीकरण नहीं है, क्योंकि यह बंदरगाहों को सार्वजनिक स्वामित्व में रखते हुए वाणिज्यिक स्वायत्तता और पेशेवर प्रबंधन अपनाने की अनुमति देता है।
- यह बंदरगाहों को वित्तीय लचीलापन प्रदान करके परिचालन दक्षता बढ़ाता है, जिससे वे सार्वजनिक हित की सेवा करते हुए निजी उद्यमों की तरह कार्य कर सकें।

वित्त वर्ष 2025-26 में बंदरगाहों के प्रदर्शन की मुख्य विशेषताएं

- **लक्ष्यों को पार करना:** प्रमुख बंदरगाहों ने सामूहिक रूप से अभूतपूर्व 915.17 मिलियन टन (MT) माल का संचालन किया, जो 904 मिलियन टन के वार्षिक लक्ष्य को सफलतापूर्वक पार कर गया।
- **शीर्ष प्रदर्शनकर्ता:** शीर्ष प्रदर्शनकर्ताओं में दीनदयाल पोर्ट अथॉरिटी (160.11 MT), उसके बाद पारादीप पोर्ट अथॉरिटी (156.45 MT) और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट अथॉरिटी (JNPA) (102.01 MT) शामिल हैं।
 - विशाखापत्तनम पोर्ट अथॉरिटी, मुंबई पोर्ट अथॉरिटी, चेन्नई पोर्ट अथॉरिटी और न्यू मैंगलोर पोर्ट अथॉरिटी ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन दर्ज किया।
- **उच्चतम विकास दर:** विकास दर के मामले में, गोवा के मोरमुगाओ पोर्ट अथॉरिटी ने 15.91% की उच्चतम वृद्धि दर्ज की,

उसके बाद कोलकाता डॉक सिस्टम (14.28%) और JNPA (10.74%) का स्थान रहा।

निगमीकरण क्यों आवश्यक हो गया

- **पुराना शासन मॉडल: प्रमुख बंदरगाह ट्रस्ट अधिनियम, 1963** को एक अलग युग के लिए डिज़ाइन किया गया था और यह वैश्वीकृत, प्रौद्योगिकी-संचालित वातावरण में कम प्रभावी हो गया।
- **निजी बंदरगाह प्रतिस्पर्धा का उदय:** कुशल निजी बंदरगाहों ने विश्वास-आधारित शासन की संरचनात्मक सीमाओं को उजागर किया।
- **नौकरशाही अक्षमताएं:** निवेश, टैरिफ और परिचालन रणनीतियों पर निर्णय लेने में देरी के कारण अवसर खो गए।
- **सीमित वित्तीय स्वायत्तता:** ट्रस्ट-आधारित बंदरगाह वित्तीय बाजारों या साझेदारियों तक कुशलतापूर्वक पहुंच नहीं सकते थे, जिससे बुनियादी ढांचे के विस्तार में बाधा आ रही थी।
- **बंदरगाह के कामकाज में वैश्विक बदलाव:** बंदरगाह उन्नत तकनीक और मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी द्वारा समर्थित एकीकृत रसद केंद्रों में विकसित हुए, एक ऐसा परिवर्तन जिसका पुराना मॉडल समर्थन नहीं कर सकता था।
- **राष्ट्रीय नीति की मांग:** सागरमाला, राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति और पीएम गति शक्ति जैसी पहलों के लिए बंदरगाहों को विश्वास-आधारित मॉडल के साथ असंगत एकीकृत लॉजिस्टिक्स हब के रूप में कार्य करने की आवश्यकता थी।

निगमीकरण के लाभ और परिणाम

- **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता:** बंदरगाह उन्नत तकनीक और मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी के साथ एकीकृत लॉजिस्टिक्स हब में विकसित हो सकते हैं। सुधार के बिना, भारतीय बंदरगाहों को वैश्विक शिपिंग नेटवर्क में अपनी स्थिति खोने का जोखिम है।
- **वित्तीय स्वतंत्रता:** निगमित बंदरगाह पारंपरिक विश्वास-आधारित संस्थाओं की तुलना में वित्तीय बाजारों और साझेदारियों तक अधिक कुशलता से पहुंच सकते हैं। गहरे पानी के बर्थ, कंटेनर टर्मिनलों और डिजिटल सिस्टम में निवेश को सक्षम बनाता है।
- **तेज़ निर्णय लेना:** निवेश, टैरिफ और परिचालन रणनीतियों पर त्वरित निर्णय प्रतिस्पर्धी माहौल में खोए हुए अवसरों को रोकते हैं।
- **राष्ट्रीय रणनीति के साथ संरेखण:** सागरमाला, राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति और पीएम गति शक्ति के तहत भारत के लॉजिस्टिक्स विजन का समर्थन करता है।

सफलता की कहानियों से सीखना:

- **पोर्ट ऑफ रोटर्डम:** एक निगमित सार्वजनिक इकाई के रूप में कार्य करता है, जो सार्वजनिक निगरानी के साथ दक्षता को संतुलित करता है।
- **PSA इंटरनेशनल (सिंगापुर):** यह दर्शाता है कि कैसे सरकार से जुड़ी कंपनियां वैश्विक नेतृत्व प्राप्त कर सकती हैं।
- **यूके (UK) का निजीकृत मॉडल:** दक्षता लाभ दिखाता है लेकिन भारत की रणनीतिक बुनियादी ढांचे की जरूरतों के साथ पूरी तरह से मेल नहीं खा सकता है।

निष्कर्ष

निगमीकरण भारत के प्रमुख बंदरगाहों को सार्वजनिक स्वामित्व को बनाए रखते हुए प्रतिस्पर्धी, कुशल और निवेश के लिए तैयार होने का एक व्यवहार्य मार्ग प्रदान करता है।

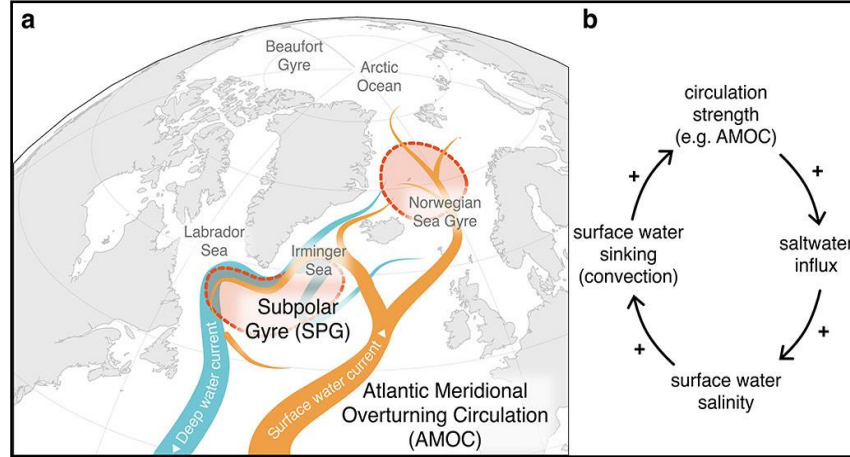
अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) का धीमा होना

संदर्भ

नए शोध से पता चलता है कि अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) 2100 तक 59% तक कमजोर हो सकता है।

अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) के बारे में

- अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) एक बड़े पैमाने पर समुद्री परिसंचरण प्रणाली है।
- यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से उत्तरी अटलांटिक की ओर गर्म सतही जल और ठंडे गहरे जल (जो थर्मोहेलिन परिसंचरण का हिस्सा हैं) को दक्षिण की ओर ले जाता है।



AMOC की कार्यप्रणाली

- अटलांटिक महासागर का गर्म पानी उत्तर की ओर यात्रा करते समय ठंडा हो जाता है, और वाष्पीकरण इसकी लवणता (salt content) को बढ़ा देता है।
- कम तापमान और उच्च लवणता के संयोजन के कारण बड़े हुए घनत्व की वजह से ठंडा पानी समुद्र में गहराई तक डूब जाता है।
- पानी की लवणता और तापमान में अंतर धारा को लगातार गहराई में बहने के लिए मजबूर करता है।
- अंततः पानी गर्म होने के बाद सतह पर वापस आ जाता है, इस प्रकार परिसंचरण पूरा होता है।
- यह एक विशाल समय पैमाने पर कार्य करता है; पानी के एक घन मीटर को पूरा चक्र पूरा करने में लगभग 1,000 वर्ष लगते हैं।

AMOC का महत्व

- **ऊष्मा बजट का रखरखाव:** AMOC पूरी पृथ्वी पर ऊष्मा और ऊर्जा को वितरित करने और ऊष्मा बजट बनाए रखने में मदद करता है।
- **जलवायु विनियमन:** AMOC पश्चिमी यूरोप (गल्फ स्ट्रीम, उत्तरी अटलांटिक ड्रिफ्ट) में सर्दियों की गंभीरता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **कार्बन पृथक्करण (Carbon sequestration):** AMOC वायुमंडल से कार्बन को अवशोषित और संग्रहीत करके 'कार्बन सिंक' के रूप में कार्य करता है।
 - इसका मानवजनित ग्लोबल वार्मिंग के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- **ध्रुवीय क्षेत्रों पर प्रभाव:** ध्रुवीय क्षेत्रों में ऊष्मा का वितरण काफी हद तक थर्मोहेलिन परिसंचरण पर निर्भर है।
 - परिणामस्वरूप, यह प्रभावित करता है कि ध्रुवों पर समुद्री बर्फ कितनी जल्दी बनती है, जो जलवायु प्रणाली के अन्य घटकों को प्रभावित करती है।

AMOC पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

- **"फ्रेशवाटर ब्रेक" (Freshwater Brake):** जलवायु परिवर्तन ग्रीनलैंड की बर्फ की चादर और आर्कटिक समुद्री बर्फ के पिघलने को तेज करता है, जिससे उत्तरी अटलांटिक में भारी मात्रा में ताजा पानी (freshwater) निकलता है, जो पानी की लवणता और घनत्व को कम कर देता है।
- **गहरे जल के डूबने में व्यवधान:** चूंकि घुला हुआ सतही जल कम घना होता है, इसलिए यह गहरे समुद्र में डूबने की क्षमता खो देता है, जो परिसंचरण को चलाने वाले "पंप" को बाधित करता है, जिससे प्रभावी रूप से पूरा वैश्विक 'कन्वेयर बेल्ट' धीमा हो जाता है।
- **तापीय असंतुलन:** ग्लोबल वार्मिंग सतही जल के तापमान को बढ़ाती है, जिससे घनत्व और कम हो जाता है और पानी को नीचे उतरने तथा ठंडी गहरे जल की धारा के रूप में दक्षिण की ओर लौटने के लिए आवश्यक प्राकृतिक शीतलन प्रक्रिया रुक जाती है।

AMOC की धीमी गति का प्रभाव

जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट (AR6) AMOC के धीमे होने के कई गंभीर वैश्विक परिणामों को रेखांकित करती है:

- **दक्षिण एशियाई मानसून:** दक्षिण एशियाई ग्रीष्मकालीन वर्षा में महत्वपूर्ण कमी, जो भारत की कृषि रीढ़ के लिए खतरा है।
 - **वर्षा का दक्षिण की ओर विस्थापन:** जैसे-जैसे उत्तरी अटलांटिक ठंडा होता है, उष्णकटिबंधीय वर्षा बेल्ट (ITCZ) दक्षिण की ओर खिंच जाती है, जिससे नमी भारतीय उपमहाद्वीप से दूर चली जाती है।
 - **कमजोर हवाएं:** यह मंदी अरब सागर से भारत की ओर बहने वाली नमी से भरी हवाओं की शक्ति को कम कर देती है।
- **अल नीनो टेलीकनेक्शन (El Niño Teleconnection)**
 - **चरम अल नीनो:** एक सुस्त AMOC दक्षिणी गोलार्ध में गर्मी को कैद कर लेता है, जिससे अल नीनो की घटनाएं अधिक चरम और अप्रत्याशित होने की उम्मीद है।
 - **सूखे का दोहरा प्रभाव:** चूंकि अल नीनो आमतौर पर भारतीय वर्षा को कम करता है, इसलिए कमजोर AMOC और तीव्र अल नीनो का संयोजन भारत के लिए गंभीर सूखे के जोखिमों का "दोहरा झटका" पैदा करता है।
- **समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र:** उत्तरी अटलांटिक में समुद्री उत्पादकता में गिरावट, जिससे वैश्विक मत्स्य पालन प्रभावित होगा।
- **समुद्र के स्तर में वृद्धि:** उत्तरी अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट पर समुद्र के स्तर में क्षेत्रीय वृद्धि।
- **चरम मौसम:** उत्तरी यूरोप में तूफानों की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि।
- **अफ्रीकी जलवायु:** साहेल क्षेत्र में ग्रीष्मकालीन वर्षा में कमी।